Raj Yoga

राजयोग

Raj Yoga is the other name of *Patanjal Yog-Sutras* (aphorism) and is simply known as Yoga. Yoga is derived from the Sanskrit root "*Yuj Samadhou*" which means Trance (=Samadhi) in the true sense. This fact is explained by *Maharishi Vyasa* in its explanation to the first aphorism of *Patanjali*.

पातञ्जलयोग सूत्रों का दूसरा नाम राजयोग है, जोकि योग के नाम से ही जाना जाता है। 'योग' शब्द 'युज् समाधौ' धातु से घञ् प्रत्यय लगाकर बना है जिसका अर्थ है समाधि। इस तथ्य को महर्षि व्यास ने पहले सूत्र की व्याख्या में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है।

Sankhaya is the theoretical knowledge to achieve the salvation. The *Sankhaya-sutras* (aphorism) were written by *Maharishi Kapil*. On the other hand Yog is the practical science to achieve the salvation. What *Maharishi Kapil* had explained in *Sankhaya* about the bondage (*bandha*) and salvation (*Kaivalya*), the same principles are explained by *Maharishi Patanjali* in its aphorisms (=*Yog-sutras)*.

सांख्य दर्शन में मोक्षप्राप्ति का यथार्थ शास्त्रीय ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। सांख्य सूत्रों के रचयिता महर्षि कपिल हैं। दूसरी ओर राजयोग में मोक्ष प्राप्ति के साधनों का क्रियात्मक ज्ञान प्रस्तुत किया है। महर्षि कपिल ने बन्धन और मोक्ष के जिस स्वरूप को प्रस्तुत किया है, उन्हीं सिद्धान्तों का ही महर्षि पतञ्जलि ने योग सूत्रों में वर्णन किया है।

Patanjal aphorisms *(=Yog-sutras)* is the scientific system for control of mind, as it is the inhibition (*nirodha*) of affairs and/or modifications (*vritis*) of mind (*Chitta*). **The result of such inhibition is achievement of self and God.**

योग सूत्रों में मनोनियन्त्रण का वैज्ञानिक क्रियात्मक रूप है, जिसमें चित्त की वृत्तियों का निरोध होता है। इस चित्तवृत्ति निरोध से आत्म-साक्षात्कार और परमात्म-साक्षात्कार होता है।

Patanjali aphorism is the sovereign path of Raj-Yoga and there are in total 195 Verses (=Sutras) in four chapters:
Samadhi-pada with 51 Verses;
Sadhan-pada with 55 Verses;
Vibhuti-pada with 55 Verses; and
Kaivalya-pada with 34 Verses.

पातञ्जल योगसूत्र राजयोग का सार्वभौम पथ हैं। योगदर्शन में चार अध्यायों में कुल १९५ सूत्र हैं —

समाधि पाद में ५१ सूत्र;
साधन पाद में ५५ सूत्र;
विभूति पाद में ५५ सूत्र; और
कैवल्य पाद में ३४ सूत्र।

On *Patanjali's* aphorism there is a authentic commentary by *Maharishi Vyas* known as *Yog-Bhashya*, which explains the Raj-Yoga in true spirit as it was meant by earlier Vedic and Yog-preachers and *Maharishi Patanjali.*

पातञ्जल योगसूत्रों पर महर्षि व्यास का प्रामाणिक भाष्य उपलब्ध होता है। व्यासभाष्य के नाम से प्रसिद्ध यह भाष्य योगसूत्रों के उन गूढ़ रहस्यों को खोलता है, जो कि वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल एवं प्राचीन ऋषियों को अभीष्ट थे।

There are various other commentaries on *Yoga* aphorism and *Vyas-Bhashya* as well. The independent commentaries on aphorism, apart from *Vyas-Bhashya,* are:

1. *Raj-martandya-vriti* by *Bhoj*;
2. *Pradeep-vriti* by *Bhav-Ganesha*;

3. *Nagojibhattiya-vriti* by *Nagojibhatt*;
4. *Maniparbha-vriti* by *Ramanand*;
5. *Yogsudhakar-vriti* by *Sadashivendra Saraswati*;
6. *Chandrika-vriti* by *Anantdev*;
7. *Patanjal-rahasaya* by *Raghavanand Saraswati.*

Apart from these *Sutra-artha-bodhini by Naraina-Teertha* was also available.

पातञ्जल योगसूत्रों पर व्यासभाष्य के अतिरिक्त अन्य स्वतन्त्र वृत्तियाँ = भाष्य भी उपलब्ध होते हैं, जोकि निम्न प्रकार से हैं —

१. भोजदेव कृत राज-मार्तण्ड वृत्ति
२. भावगणेश विरचित प्रदीप वृत्ति
३. नागोजीभट्ट विरचित नागोजीभट्ट वृत्ति
४. रामानन्द विरचित मणिप्रभा वृत्ति
५. सदाशिवेन्द्र शास्त्री कृत योगसुधाकर वृत्ति
६. अनन्तदेव कृत चन्द्रिका वृत्ति
७. राघवानन्द सरस्वती कृत पातञ्जल रहस्य

इसके अतिरिक्त नारायणतीर्थ कृत सूत्रार्थबोधिनी का वर्णन भी मिलता है।

On the Vyas-Bhashya, there are following commentaries are available in Sanskrit:

1. *Tattva-vaishardi* by *Vachaspati Mishra*;
2. *Yog-varttika* by *Vigyan Bhikshu*;
3. *Bhasvati* by *Hariharanand Aranya*; (Also available in Hindi)

पातञ्जल योगसूत्रों पर व्यासभाष्य पर निम्न वृत्तियाँ संस्कृत में उपलब्ध होती हैं —

१. वाचस्पति मिश्र विरचित तत्त्व-वैशारदी
२. विज्ञानभिक्षु विरचित योग-वार्त्तिक
३. हरिहरानन्द आरण्य कृत भास्वती टीका (हिन्दी में भी उपलब्ध)

Apart from the above, following scholars have written their commentaries on Vyas-Bhashya in Hindi:

1. Swami Brahmleen Muni; 2. *Ramashankar Tripathi*; 3. *Suresh Chandra Srivastva*; 4. Dr. Vimla Karnatak 5. *Acharya Rajvir Shastri*; 6. *Swami Satyapati Parivrajak*; and 7. *Satish Arya*. (Developer of this website and **English Translation of work done by me is also in progress)**

उपर्युक्त वृत्तियों के अतिरिक्त निम्न विद्वानों ने व्यासभाष्य पर हिन्दी भाषा में व्याख्यायें लिखी हैं —

१. स्वामी ब्रह्मलीन मुनि जी; २. रमाशंकर त्रिपाठी; ३. सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव; ४. डा० विमला कर्णाटक; ५. आचार्य राजवीर शास्त्री; ६. स्वामी सत्यपति परिव्राजक; तथा अन्त में ७. सतीश आर्य

(मानवमात्र में योग, वेद और वेदानुकूल वैदिक साहित्य के ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने हेतु ही मुझ (= सतीश आर्य) द्वारा इस साईट का निर्माण कराया गया है। मैंने योगदर्शन की व्याख्या का अंग्रेजी अनुवाद भी आरम्भ कर दिया है, जो कि धीरे-धीरे इस साईट पर भी उपलब्ध होगा।)

In addition to the above *Swami Vigyana-ashramji* and *Swami Brahmmuni ji* had translated the *Vyas-Bhashya* in Hindi, without any commentary thereon.

इसके अतिरिक्त स्वामी विज्ञानाश्रम जी और स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने व्यासभाष्य का हिन्दी अनुवाद किया है, परन्तु उस पर अपनी ओर कोई व्याख्या नहीं की है।

The following scholars have also written independent commentaries on Yoga aphorism in Hindi, namely *Swami Omanand Saraswati, Acharya Gyaneshwar, Acharya Udyavir Shastri, Aryamuni, Swami Ram-sarup* and *Swami Ram-dev*, and one translation in English by Rama Prasada.

पातञ्जल योगसूत्रों पर निम्न विद्वानों ने हिन्दी में स्वतन्त्र रूप से कार्य किया है — स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य उदयवीर शास्त्री, आर्य मुनि जी, स्वामी रामस्वरूप जी, और स्वामी रामदेव जी। डा० रमाप्रसाद जी द्वारा

व्यासभाष्य (वाचस्पतिमिश्र की व्याख्या सहित) का अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध होता है।

Samadhi Pada (On Trance)

समाधि पाद

This chapter contains 51 aphorisms. It explain the meaning of Yoga. According to *Patanjali* Yoga is the science of controlling the direct and indirect modifications / affairs (i.e. *Vritis*) of Mind (*Chitta*) (Sutra 2). With such control the Soul stays in its real self (=conscious form) and God (Sutra 3). In the other part of life, i.e. in the state of mind other than that of restrained state of mind, the Soul, not staying in its real self (Though the same is always stays in its conscious form), acts and behaves according the modifications (=*Vritis)* of Mind (*Chitta*) (Sutra 4).

समाधि पाद में कुल ५१ सूत्र हैं। इस पाद में योग = समाधि का मुख्य रूप से वर्णन किया गया है। महर्षि पतञ्जलि के अनुसार योग वह विज्ञान है जिसके द्वारा चित्त की सभी प्रकार की वृत्तियों का निरोध किया जाता है (सूत्र २)। चित्त की वृत्ति का निरोध होने पर आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होती है (सूत्र ३)। इससे भिन्न अवस्था में आत्मा अपने स्वरूप में स्थित न होकर वृत्तियों के स्वरूप का भासता है और उन वृत्तियों के अनुरूप ही व्यवहार भी होता है। (सूत्र ४)।

There are five states of Mind. Depending on the degree of distraction, *Vyas* has categorized them as below:

1. *Kshipta* – i.e. Disturbed.
2. *Mudha* – i.e. Stupefied.
3. *Vikshipta* – i.e. Distracted.
4. *Ekagra* – i.e. One-pointed / Concentrated.
5. *Niruddha* – i.e. Restrained State of Mind.

चित्त की पाँच अवस्थायें हैं। विक्षिप्तता के स्तर के आधार पर महर्षि व्यास ने चित्त की अवस्थाओं को पाँच भागों में बाँटा है — क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।

In the first three states of mind, Yoga is not possible since these stages are negative and cause impediments to the healthy growth of Mind. These stages recognize the level of disturbances in the mind.

चित्त की प्रथम तीन अवस्थाओं में समाधि सम्भव नहीं होती क्योंकि इन अवस्थाओं का नाकारात्मक कहा जाता है जो चित्त = मन एवं बुद्धि के विकास में बाधक होती हैं। इन अवस्थाओं में विक्षिप्तता के विभिन्न स्तरों का ज्ञान होता है। (सूत्र २)

The Stupefied State of Mind (=*Mudha* Category) is distinguished by inertia, lethargy, sluggishness, vice, ignorance, sleep. Under this state of mind people feel high level of violence, greediness, fully involved the objects available through external sense organs, sexuality, sensuality, not believing in religion, God, Soul, having least level of logical knowledge about the daily affairs as well as religion.

चित्त की मूढावस्था को मोहमयता एवं मूर्च्छितरूपता भी कहा जाता है। तमोगुण की प्रबलता के कारण चित्त निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, मूर्च्छा, अधर्म, अज्ञान आदि से ग्रस्त रहता है। इस अवस्था में व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, हिंसा, बाह्य पदार्थों में पूर्णतया आसक्त, तथा धर्म, ईश्वर, आत्मा में अविश्वासी रहता एवं इनके बारे में न्यूनतम ज्ञान रखता अथवा अज्ञानी ही रहता हुआ वैसे ही कर्म भी करता है।

The Disturbed State of Mind (=*Kshipta* Category) is at the middle level and majority of normal human being have this level of mindset, during the major part of the daily life, in their life cycle. The person gets happiness from the objects available through sense organs. Due to disturbing energy, movement of mind is at very high rate and one try to get more and more from the external world.

क्षिप्तावस्था मध्यम स्तर की है, और बहुसंख्यक मानव समुदाय के चित्त = मन की अवस्था यही है, और व्यक्ति के जीवन का अधिकतम भाग इसी अवस्था में बीत जाता है। रजोगुण की तीव्रता के कारण व्यक्ति विषयों की ओर चलायमान रहता है, तथा सांसारिक विषयों सुख-साधनों को वह अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता है। वह इन्द्रियों से प्राप्त विषयों में सुख का अनुभव करता है।

The distracted State Mind (=*Vikshipta* Category) is much better stage of mind as compared to first two. Under this stage mind one starts moving towards logical knowledge, religion, desirelessness, Soul and God but he still lacks consistency and is unable to concentrate.
Last two stages are ideal for *Yog*.

चित्त की विक्षिप्तावस्था प्रथम दो अवस्थाओं से अधिक उन्नत होती है। इस अवस्था में व्यक्ति की वृत्ति धर्म, ज्ञान, वैराग्य, आत्मा एवं परमात्मा की ओर होती है, परन्तु रजोगुण के उभार के कारण चित्त इन विषयों में स्थिर नहीं हो पाता।

चित्त की अन्तिम दो अवस्थायें योग के अनुकूल हैं।

After that five types of modifications (=*vritis)* are explained as below:

1. *Pramana* – Comprehension. It is of three types namely Direct Perception (=*Pratyaksha),* Inference *(=Anumana)*, and oral comprehension (i.e. as said in vedic literature) (=*Shabda Pramana)*; (Sutra 7)
2. *Viparyaya* – Misapprehension. It is of five type namely Opposite / Illogical Knowledge (=*Avidya),* egoism (=*Asmita),* Attachment (=*Raga),* Hatred (=*Dvesha)* and Sense of Self Preservation (=*Abhinivesa)*; (Sutra 8)
3. *Vikalpa* – Conceptualization. Under this the person believe (and creates the impression of such knowledge in his mind) in a thing or object which does not exist at all in the real world, but known from the words. (Sutra 9)
4. *Nidra* – Deep Sleep; (Sutra 10) and
5. *Smriti* – Memory. (Sutra 11)

इसके उपरान्त पाँच प्रकार की वृत्तियों का व्याख्यान निम्न प्रकार से किया गया है —

१. प्रमाण — जो कि तीन प्रकार है — प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम (= शब्द प्रमाण) (सूत्र ७);

२. विपर्यय — अर्थात् मिथ्या ज्ञान जो पदार्थ के स्वरूप के स्वरूप के अनुसार नहीं होता। मिथ्याज्ञान को अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश भी कहा जाता है।(सूत्र ८);

३. विकल्प — वस्तु / पदार्थ से शून्य शब्द ज्ञान। इस में व्यक्ति उस पदार्थ के बारे में कहता और मानता है, जोकि वास्तव में होता ही नहीं है यथा आकाश पुष्प आदि (सूत्र ६);

४. निद्रा (सूत्र १०); तथा ५. स्मृति (सूत्र ११)।

For Controlling these modifications (=*Vritis)*, two steps are explained i.e. practice (=*Abhyasa)* and desirelessness (=*Vairagya)* (Sutra 12-16). After that Two types of Trance (=*Samadhis)* are explained, namely:

1. *Cognized Trance (=Sampragyat* Samadhi). It is of four types:
   a. Philosophical Curiosity Cognitive Trance *(=Vitarka-nugat Sampragyat Samadhi)* – is of two types namely Indistinct (=*savitarka)* and Distinctive (=*nirvitarka)*;
   b. Meditation Cognitive Trance *(=Vichara-nugat Sampragyat Samadhi)* – is also of two types namely meditative (=*Savichara)* and ultra-meditative (=*Nirvichara)*;
   c. Elation Cognitive Trance *(=Ananda-nugat Sampragyat Samadhi)*;
   d. Egoism Cognitive Trance *(=Asmita-nugat Sampragyat Samadhi)*. (Sutra 17)
2. Ultra-cognitive Trance *(=Asampragyat Samadhi)*. (Sutra 18)

इन वृत्तियों के निरोध के लिए दो उपायों — अभ्यास और वैराग्य का वर्णन किया गया है (सूत्र १२-१६)। इसके उपरान्त दो प्रकार की समाधियों का वर्णन किया गया है —

१. सम्प्रज्ञात समाधि — यह चार प्रकार की होती है

- वितर्कानुगत — यह सवितर्क और निर्वितर्क रूप से दो प्रकार की होती है। इसमें चित्त में स्थूल विषयों का आलम्बन होता है।

- विचारानुगत — यह सविचार और निर्विचार रूप से दो प्रकार की होती है। इसमें चित्त में सूक्ष्म विषयों का आलम्बन होता है।

- आनन्दानुगत — इसमें चित्त में अध्यात्मप्रसाद की प्राप्ति से दुःखरहित अवस्था की प्राप्ति रूप सुख का आलम्बन होता है। और

- अस्मितानुगत — इसमें जीवात्मा का आलम्बन होता है। (सूत्र १७)

२. असम्प्रज्ञात समाधि (सूत्र १८)

To achieve these Trances (=*Samadhis)* various methods various means are explained (Sutra 19-20). Achievement of Trance (=*Samadhi)* is based on the speed of performing the means and level of Desirelessness (=*Vairagya)* (detachment from external world and also nature and its qualities/properties) (Sutra 21-22).

इन समाधियों को प्राप्त करने के विभिन्न उपायों का वर्णन सूत्र १६ और २० में किया गया है। समाधि की प्राप्ति का काल, समाधि के विभिन्न साधनों को अपनाने और वैराग्य के स्तर पर निर्भर करता है (सूत्र २१-२२)।

Here *Maharishi Pantanjali* advises the concept of Surrender to GOD (=*Ishwar-pranidhana*) (Sutra 23). According to him, as advised in Vedic Literature also, GOD (=*Ishwar)* is the Supreme SOUL (=*Purusha)*, unaffected by any afflictions, actions, fruits of actions or by any inner impressions of desires or traces of any action (Sutra 24). He is the complete manifestation of the seed of omniscience (Sutra 25), unconditioned by time, He is the teacher of even the most ancient teachers (Sutra 26), and is named as "Aum" (Sutra 27).

यहाँ महर्षि पतञ्जलि समाधि प्राप्ति हेतु ईश्वर-प्रणिधान अर्थात् ईश्वर के प्रति समर्पण का विधान करते हैं (सूत्र २३)। महर्षि पतञ्जलि, वेदानुकूल प्रमाणों के अनुसार, ईश्वर की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि क्लेश, कर्मों, उनके सुख-दुःख फलों (जाति, आयु और भोग रूप) तथा उनकी वासनाओं से सर्वथा असम्बद्ध जो पुरुष विशेष है, वह ईश्वर है (सूत्र २४), उसमें सर्वज्ञता का बीज है (सूत्र २५), तथा

काल से अबाधित होता हुआ, पूर्व गुरुओं का भी गुरु है (सूत्र २६), और उसका नाम प्रणव = ओ३म् है (सूत्र २७)।

After that various hurdles / obstacles for performance of the Yogic practices are defined (Sutra 30-31), and the suggests a powerful way to come out of theses hurdles, that is, to get the shelter of Divine Soul (God) (Sutra 32).

इसके पश्चात् योगसूत्र ३०-३१ में योगाभ्यास के विभिन्न विघ्नों = अन्तरायों का वर्णन किया गया है तथा सूत्र ३२ में इन सभी विघ्नों को दूर करने का एकमात्र उपाय परम-पिता परमात्मा की शरण कहा है।

Now to achieve the stability of state of mind, various means of purifying the mind (=*parikarmas*) are advised; and by achieving the stability *Maharishi Patanjali* explain the powers of mind (*Chitta*) (Sutra 34 – 40). On achieving the state of stability, one can concentrate on any object or subject of external world which includes from the smallest particle of atom to the largest sky.

अब योगसूत्र ३३-३६ में चित्त की स्थिरता की प्राप्ति हेतु, विभिन्न प्रकार के परिकर्मों का निर्देश किया गया है। इस प्रकार से चित्त की स्थिरता प्राप्त होने पर चित्त की शक्ति = योग्यता का वर्णन योगसूत्र ४० में किया गया है। महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऐसा चित्त सूक्ष्म परमाणु से लेकर बृहत् आकाश पर्यन्त सभी पदार्थ में स्थिर हो जाता है।

Four type of Trance (=Samadhi) are explained starting from *Savitarka* to *Nirvichara Cognitive Trance (=Sampragyat Samadhi),* and these four types are termed as Seeded Trance (=*Sabeej Samadhis)*. (Sutra 42 - 46). With the achievement of these Trances (=*samadhis)* Yogi is able to know the real knowledge of all objects starting from Earth to Nature (Sutra 45). He gets the Cognitive Faculty (which of full of truth only) (=*Ritambhara-pragya)* which is the best from all other comprehension (*Pramanas*), since with this, Yogi himself realizes the truth about the

concentrated object (Sutra 48 – 49). With the Cognitive Faculty (=*Ritambhara-Pragya)* traces of all other types of knowledge (*pramana*) stops (Sutra 50). In the end the way of achievement of Seedless Trance (*Nirbeeja-samadhi)* which is also called as Ultra-cognitive Trance *(Asampragyat-samadhi*) is explained (Sutra 51).

चार प्रकार की सम्प्रज्ञात समाधि का वर्णन आरम्भ करते हुए योगसूत्र ४२ से ४६ में सवितर्क से लेकर निर्विचार सम्प्रज्ञात समाधियों के विषयों एवं प्रकारों को कहा हगया है। ये चारों की सबीज समाधियाँ कहलाती हैं। इन समाधियों के सिद्ध हो जाने पर योगी स्थूल भूत पृथिवी से लेकर प्रकृति पर्यन्त सभी पदार्थों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेता है (सूत्र ४५)। इस प्रकार से योगी को ऋतम्भरा-प्रज्ञा की प्राप्ति होती है, जो कि सत्य को ही ग्रहण करती है तथा अन्य सभी प्रमाणों से श्रेष्ठ होती है। इस ऋतम्भरा प्रज्ञा से योगी आलम्बित पदार्थ का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेता है (सूत्र ४८-४६)। इस समाधि-प्रज्ञा से उत्पन्न संस्कारों से अन्य सभी संस्कार = वासनायें दब जाती है (सूत्र ५०)। इस पाद के अन्त में निर्बीज समाधि = असम्प्रज्ञात समाधि की प्राप्ति का उपाय बताया गया है (सूत्र ५१)।

Sadhan-pada
(ON PRACTICE OF YOGA)
साधन पाद

Under this Chapter there are 55 Sutras. *Patanjali* has started with the Yoga of Action (=*Kriya-yog)* for the people who has the distracted state of mind (=*Vkishpta* Category). Yoga of Acation (=*Kriya-Yog)* consists of three parts i.e. Purificatory Action (=*Tapa),* Study *(=Swadhyaya)*, and Surrender to GOD (=*Iswhar-parnidhana)* (Sutra 1). These are also part of Eight-Fold Yoga (=*Astang-yoga)* and counted under Observances (=*Niyama)*. Yoga of Action (=*Kriya-yog)* helps the Yogi (=*sadhak)* to reduce the level of afflictions and to bring about Trance (Sutra 2).

इस अध्याय में कुल ५५ सूत्र हैं। महर्षि पतञ्जलि विक्षिप्त चित्त वाले साधक के लिए क्रियायोग का विधान करते हैं। तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान का सम्पादन क्रियायोग कहलाता है (सूत्र १)। ये तीनों की अष्टांग योग के अन्तर्गत नियमों में भी गिने गये हैं। क्रियायोग के सम्पादन से क्लेशों का नाश तथा समाधि की प्राप्ति होती है (सूत्र २)।

Afflictions are the acts and / or knowledge disturbing the state of mind (*Chitta*) and moving the man towards external world. Afflictions are five in numbers namely Nescience (=*Avidya),* Egoism (=Asmita), Attachment (=Raga), Aversion / Hatred (=Dvesha) and Fear of Death (=Abhinivesha) which is also termed as Sense of Self Preservation. Nescience is the mother of other four afflictions. Nescience is the wrong and / or opposite knowledge; Egoism (=*Asmita)* is to consider the properties of Mind (*Chitta*) as of Soul and act accordingly; Attachment (=*Raga)* is of the external and internal objects other than Self (Soul), and other favorable human-beings i.e. mother / father / spouse / children / friends etc); Aversion / Hatred (=*Dvesha)* is towards things / persons which comes in the way of enjoying favorable things and persons for self and / or favorable persons (i.e. relatives and friends)); and Fear of Death (=*Abinevesha)* is sense of self preservation. (Sutra 5 – 9).

वह क्रिया अथवा ज्ञान जो चित्त का विक्षिप्त करे और पुरुष बाह्य संसार और भोगों में प्रवृत्त रखे, क्लेश कहाते हैं। क्लेश संख्या में पाँच हैं — अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश (सूत्र ३)। अविद्या को अगले चारों क्लेशों की जननी कहा गया है (सूत्र ४)। अविद्या मिथ्या ज्ञान एवं विपरीत ज्ञान है; अस्मिता अर्थात् बुद्धि के धर्मों को आत्मा का धर्म मानकर वैसा ही व्यवहार करना; राग अर्थात् सुख और सुख साध नों के लालसा, तृष्णा आदि का होना है; द्वेष अर्थात् दुःख और दुःख साधनों के प्रति क्रोध बुद्धि का होना; तथा मृत्यु का भय अविनिवेश क्लेश कहलाता है (सूत्र ५-६)।

It is explained till the Nescience (=*Avidya)* remains in the mind (*Chitta*), the Soul keeps on taking births in various bodies and leaves the bodies

i.e. dies and gets various types of pains. Actions (=Karmas) performed by a state of mind, which is effected by nescience (=*Avidya*) bears fruits in three ways i.e. *Jaati* (taking birth in various types of bodies – various living beings i.e. animals, birds, man etc), *Aayu* (living a time span of life in that body), and *Bhog* (experiencing the various types of objects and things for the survival of that particular body, made of nature through sense-organs). These *Jaati, Aayu* and *Bhog* give pleasure and pain to the Soul through Mind. (Sutras 13-14).

यह कहा गया है कि जब तक अविद्या चित्त में रहती है, तब तक आत्मा जन्म-मरण के अनवरत चक्र में लगी रहती है, और कर्मानुसार विभिन्न शरीरों को प्राप्त करते हुए सुख-दुःखों का भोग करती रहती है। अविद्याग्रस्त चित्त की अवस्था में कर्म करने से बना कर्माशय तीन प्रकार के फलों को प्रदान करता है — जाति (= अर्थात् विभिन्न प्रकार के शरीरों में जन्म लेना जैसे कि पशु, पक्षी, वृक्ष, मनुष्य आदि), आयु (= उस प्राप्त शरीर में जीवन काल), तथा भोग (= उन शरीरों में विभिन्न प्रकार के भोग्य पदार्थों का भोग करना)। ये जाति, आयु और भोग पुण्यापुण्य कर्माशय के आधार पर सुख-दुःख रूप होते हैं (सूत्र १३-१४)।

Whatever achieved from the sense-organs by way of nature is totally painful, even though persons feel pleasure in getting them in the life-time. This painfulness is of four types (Sutra 15).

सूत्र १५ में महर्षि पतञ्जलि स्पष्ट करते हैं कि इन्द्रियों के माध्यम से जो कुछ भी प्रकृति और उससे बने पदार्थों की प्राप्ति होती है वह सभी कुछ दुःख रूप ही है, चाहे उन भोगों से वर्तमान काल में सुखों की अनुभूति ही क्यों न हो रही हो। यह दुःख भी चार प्रकार का है।

There of four parts of *Yogic philosophy* i.e. Avoidable *(=Heya)*, Cause of Avoidable *(=Heya-hetu)*, Removal *(=Hana)* and Means of Removal *(=Hanopaya)*. Avoidable *(=Heya)* is that pain which has not come yet but can be faced in future (Sutra 16). Cause of Avoidable *(=Heya-Hetu)* i.e. Cause of Pain is attachment of Soul with Nature (Sutra 17). Properties

and Functions of Nature are explained in Sutra 18 and 19, and that of Soul in Sutra 20. All functions of nature are for the Soul only (Sutra 21) and what is the achievement from the attachment of Soul with the nature is explained in Sutra 23. The root cause for the attachment of Soul with the nature is Nescience (=*Avidya)* (Sutra 24). Removal (=Hana) of Nescience effects the removal of conjunction of the Soul and Nature is called the Salvation (Sutra 25). To achieve the salvation, the ultimate necessity is undisturbed Discriminative Knowledge (=*Vivek-khyati)* i.e. the practical distinctive knowledge of the properties and functions of Soul and Nature separately (Sutra 26).

यह योगशास्त्र चार अंगों वाला है — हेय, हेयहेतु, हान और हानोपाय। इसमें वे दुःख जो भविष्य में प्राप्त होने वाले हैं उनको हेय = त्याग करने योग्य कहा है (सूत्र १६)। हेयहेतु अर्थात् इन त्यागने योग्य दुःखों का कारण पुरुष = आत्मा का प्रकृति के संयोग है (सूत्र १७)। प्रकृति के गुणों और कार्यों को योगसूत्र १८-१६ में कहा गया है; और आत्मा के स्वरूप को योगसूत्र २० में स्पष्ट किया है। सूत्र २१ में कहा है कि प्रकृति के सभी कार्य आत्मा के लिए ही हैं। तथा सूत्र २३ में पुरुष और प्रकृति के संयोग से होने वाली प्राप्तियों को कहा है। सूत्र २४ में पुरुष का प्रकृति से संयोग का कारण अविद्या है, यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया गया है। अविद्या के नष्ट होने पर प्रकृति और पुरुष का संयोग भी नष्ट हो जाता है, जिसे हान = कैवल्य कहा जाता है (सूत्र २५)। इस हान = कैवल्य को प्राप्त करने का उपाय विवेक-ख्याति है जो कभी विपल्व को प्राप्त न हो (सूत्र २६)। विवेकख्याति अर्थात् प्रकृति और पुरुष के स्वरूप का पृथक्-पृथक् ज्ञान का होना है।

To achieve the Discriminative Knowledge (=*Vivek-khyati)*, *Maharishi Patanjali* had advised Eight-fold Yoga (=*Astang-Yog)* i.e. Restraint (=*Yama),* Observances *(=Niyama),* Posture *(=Asans),* Regulation of Breath *(=Pranayama),* Abstraction *(=Pratyahar),* Concentration *(=Dharna),* Meditation *(=Dhyan)* and Trance (=*Samadhi)* (Sutra 28 – 29).

विवेकख्याति की प्राप्ति हेतु महर्षि पतञ्जलि ने अष्टांग योग का विधान किया है। जो कि — यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है। इनके सम्यक् अनुष्ठान से योगी को विवेक-ख्याति की प्राप्ति होती है (सूत्र २८)।

Restraint (=Yama) – are the eternal vows or abstentions which are essentially to be observed in all spirits by the *Sadhak* = Yogi. These are five in number :

a. *Non-Violence (=Ahinsa)* that is to performed always, in all respects i.e. by words, by thinking, by action of body towards every living being;

b. *Veracity (=Satya)* = non-lying;

c. Abstinence from Theft *(=Aasteya)* = non-covetousness;

d. *Continence (=Brahmcharya)* = non-sexuality; and

e. Abstinence from avariciousness *(=Aaprigriha)* = non-possiveness (Sutra 30).

These Restraints (=Yamas) are to be performed always, under all circumstances, without any excuses. (Sutra 31)

यम अर्थात् चित्त की वृत्तियों का नियन्त्रण एवं नियमन करना। यमों का पूर्णरूपेण परिपालन प्रत्येक साधक के परमावश्यक है। यम संख्या में पाँच हैं —

अहिंसा — सभी प्राणियों के प्रति सब कालों में सब प्रकार से द्रोह का त्याग करना;

सत्य — जैसा अपने ज्ञान में हैं, वैसा ही बोलना, करना और मानना;

अस्तेय — सभी प्रकार से चोरी का त्याग;

ब्रह्मचर्य — जितेन्द्रय होना तथा विद्या का ग्रहण करना; तथा

अपिरग्रह — आवश्यकता से अधिक पदार्थों का संग्रह न करना। (सूत्र ३०)

साधक को यमों का परिपालन, हमेशा, प्रत्येक स्थिति में और बिना किसी अपवाद के काना चाहिए (सूत्र ३१)।

Observances (=Niyama) – these are five observances, namely

a. Cleanliness *(=Sauch)* – purity for mind and body as well;

b. Contentment *(=Santosha)*;

c. Purficatory Action *(=Tapa)* – austerity;

d. Study *(=Swaadhyaaya)* – Study of books explaining salvation i.e the process of detachment of soul from matter and Study of Self and / or God.

e. Surrender to GOD (=Ishwar-pranidhaan) (Sutra 32).

नियम भी संख्या में पाँच हैं —

शौच — शरीर और मन की शुद्धि करना;
सन्तोष — धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थ करके प्रसन्न रहना;
तप — धर्माचरण और शुभ कर्मों का आचरण;
स्वाध्याय — मोक्ष शास्त्रों का और स्वयं का अध्ययन;
ईश्वर-प्रणिधान — ईश्वर के प्रति समर्पण। (सूत्र ३२)

To avoid the feelings and acts of Violence, various means and types of violence are explained. One is not only responsible for the violence done by himself, but he is also responsible for the violence got done through others and also for the violence done by others but supported by him in either way i.e. by thinking, words or action. The causes of violence are described as greed, anger and illusion. (Sutra 33).

Aphorism 35 to 39 explains the achievements to the Yogi by performing Restraints (=*Yamas)* and Sutra 40 to 45 explains the achievement of performing Observances (=*Niyamas)*.

हिंसा के विचारों और कार्यों को पूर्णरूपेण रोकने हेतु, हिंसा के ८१ प्रकारों का व्याख्यान किया गया है। व्यक्ति के अपने द्वारा की गई हिंसा का ही दोषी नहीं होता, वरन् वह दूसरों से करवाई गई, और अन्यों द्वारा कृत परन्तु उसके द्वारा समर्थित (मनसा, वाचा, कर्मणा) हिंसा का भी वह दोषी होता है। हिंसा के कारणों लोभ, क्रोध और मोह का विस्तार पूर्वक वर्णन भी योगसूत्र ३३ में किया गया है।

योगसूत्र ३५ से ३९ में यमों के परिपालन से होने वाली सिद्धियों = उपलब्धियों का वर्णन किया गया है, और योगसूत्र ४० से ४६ में नियमों के सम्यक् परिपालन से होने वाली सिद्धियों = उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

Posture *(=Asana)* – Yogic posture mainly the *Sidhasan, Padmasan* or *Ardh-padmasan* used for meditation (Sutra 46). Means of achieving the posture (=Asans) are explained which are termed as stopping of all movements and concentration in Sky and / or God (Sutra 47) and result of such achievement is to get rid of all type of *Dwandas*, i.e. pleasure and pain, losses and gains, thrust and hunger etc (Sutra 48).

योगसूत्र ४६ में ध्यान के लिये उपयोगी सिद्धासन, पद्मासन और अर्ध-पद्मासन का निर्देश किया गया है। योगसूत्र ४७ में आसन सिद्धि के उपाय के रूप में सभी गतिविधियों को रोकना तथा अनन्त आकाश एवं परमात्मा में समापत्ति को कहा गया है, जिसका परिणाम यह होता है कि साधक को विभिन्न द्वन्द्व यथा भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि बाधित नहीं करते (सूत्र ४८)।

Regulation of Breath *(=Pranayama)* – Suspending or Controlling Breadth and is four types. Theses four types of explained in Sutras 50 and 51. With the success of *Pranayama*, yogi gets the ability to concentrate the mind (*Chitta*) and traces of Nescience *(=Avidya)* also reduces in the mind (Sutra 52 – 53).

योगसूत्र ५०-५१ में चार प्रकार के प्राणायामों का वर्णन किया गया है, जो श्वास-प्रश्वास की गति का नियन्त्रण करने से होते हैं। प्राणायाम के सिद्ध होने पर साधक के मन में धारणा की योग्यता प्राप्त होती है, तथा उसके चित्त में प्रकाश = ज्ञान के आवरण = अविद्यादि का नाश होता है (सूत्र ५२-५३)।

Abstraction *(=Pratyahara)* means Withdrawal of senses from external objects / outside world (Sutra 54) and in sutra 55 the achievement of abstraction *(=Pratyahara)* is explained.

योगसूत्र ५४ में प्रत्याहार का वर्णन किया गया है अर्थात् इन्द्रियों का अपने-अपने विषय के साथ सम्बन्ध न होकर चित्त के स्वरूप के अनुरूप हो जाना है। प्रत्याहार के सिद्ध हो जाने पर इन्द्रियों की परम = सर्वोत्कृष्ट वशीकारता हो जाती है (सूत्र ५५)।

Vibhuti-pada
(ON ATTAINMENTS)
विभूतिपाद

Vibhuti-pada consists of 55 sutras. It starts with the explaining the concepts of last three parts of Eight-fold Yoga (=*Astang-yog)*.

विभूतिपाद में ५५ सूत्र हैं। इस का आरम्भ अष्टांगयोग के अन्तिम तीन अंग धारणा, ध्यान और समाधि की व्याख्या से होता है।

Concentration (=Dharna) – means fixing the affairs of mind (*Chitta*) on a single particular object and / or subject (Sutra 1).

धारण का अर्थ है कि चित्त का किसी एक देश विशेष में लगाना = बाँधना। इसमें साधक का विषय कोई एक अर्थ होता है। सूत्र १।

Meditation (=Dhyana) – means intense contemplation of the nature of object and / or subject of concentration (Sutra 2).

योगसूत्र २ के अनुसार ध्यान का अर्थ है धारणा के विषय के ज्ञान के समान प्रवाह का चलता रहना।

Trance (=Samadhi) – means complete merging consciousness with the object and / or subject of medication, i.e. knowing the medicated object / subject only, in complete terms, and forgetting oneself (Sutra 3).

समाधि का अभिप्राय है कि जब ध्यान ध्येय वस्तु के स्वरूप मात्र को ही प्रकाशित करे और योगी अपने स्वरूप को भी भूल जाये अर्थात् पूर्णरूपेण आलम्बिल विषय के स्वरूप का ही ज्ञान होना समाधि है। योगसूत्र ३।

The practice of Concentration (=*Dharna),* Meditation *(=Dhyana)* and Trance (=*Samadhi)* upon one object and / or subject is called *Sanyama* (Sutra 4). By the mastery of *Sanyama*, yogi achieves the light of knowledge and its practice is to be accomplished in stages. These Concentration, Meditation and Trance are the internal or direct means of achieving

the Cognized Trance (=*Sampragyat Samadhi)*, on the other hand these are outside supporters for achieving the Ultra-cognized Trance (=*Asampragyat Samadhi)*. (Sutra 7 – 8).

योगसूत्र ४ के अनुसार धारणा, ध्यान और समाधि का एक विषय पर होना संयम कहाता है। इस संयम के जय होने पर योगी को प्रज्ञालोक (= समाधि प्रज्ञा का आलोक) की प्राप्ति होती है। ये तीनों अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि सम्प्रज्ञात समाधि के अन्तरंग है, जबकि असम्प्रज्ञात समाधि हेतु ये तीनों भी बहिरंग ही कहलाते हैं। (सूत्र ७-८)।

The properties of mind which are called as suppressive modification (=Nirodh-parinama), Trance modification (=Samadhi-parinama) and one-pointed modification (=aikagrata-parinama) are explained in the Sutras 9 – 12. With the explanation of these modifications, the characteristic qualities (dharma), secondary qualities (lakshan) and conditions (avastha) of objective phenomena (physical objects which are called *Bhoota)* and instrumental phenomena (sense organs which are called *Indriyan*) are also explained in detail by Vyasa.

योगसूत्र ९ से १२ में चित्त के तीन परिणाम निरोध-परिणाम, समाधि-परिणाम और एकाग्रता-परिणामों का वर्णन किया गया है। इन तीनों परिणामों से ही इन्द्रियों और सूक्ष्म एवं स्थूल भूतों के धर्म, लक्षण और अवस्था परिणामों को कहा गया है। योगसूत्र १३ की व्याख्या में महर्षि व्यास ने विस्तार पूर्वक इन धर्म, लक्षण और अवस्था परिणामों को स्पष्ट किया है।

The chapter explains the various types of Attainments (=*Vibhutis)* which can be achieved with the help of *Sanyama* on various objects and / or subjects. Here Attainment (=*vibhuti)* means Yogic Powers. From aphorism 16 onwards various types of Attainments (=Vibhutis) are explained. The Attainment (=*vibhuti)* is of two types-

a) where the yogi gets the absolute knowledge on the subject or object under *Sanyama*; and

b) Where the yogi get the power of mind and / or body (physical).

इस पाद में विभिन्न विषयों पर संयम से प्राप्त होने वाली विभिन्न विभूतियों का वर्णन किया गया है। योगसूत्र १६ से विभूतियों का वर्णन आरम्भ होता है। विभूतियाँ दो प्रकार की हैं —

१. जिसमें योगी संयम के विषय का यथार्थ ज्ञान पूर्णरूपेण से करता है, ये ज्ञानात्मक सिद्धियाँ कहलाती हैं; तथा

२. जिसमें योगी मन अथवा शरीर में योग्यता विशेष प्राप्त करता है, ये क्रियात्मक सिद्धियाँ कहलाती हैं।

For the Attainments (=*vibhutis)* relating to knowledge, the Yogi is to perform the *Sanyama* on the particular object / subject only and there is no requirements of physical actions on the knowledge achieved by him from *Sanyama*. The knowledge so achieved, is of permanent in nature during the life time of Yogi. Examples of some of such Attainments (=*vibhuti)* includes from the Aphorism 16 to 32, where the major Attainments (=*vibhutis)* are in the nature of absolute knowledge of the subject / object.

ज्ञानात्मक सिद्धियों की प्राप्ति हेतु योगी को सम्बद्ध विषय पर संयम अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि को करना होता है, इसके किसी अन्य क्रिया विशेष की कोई आवश्यकता नहीं होती, और न ही उस प्राप्त ज्ञान पर किसी शरीरिक प्रतिक्रिया की ही आवश्यकता होती है। इस प्रकार से प्राप्त ज्ञान योगी की स्थाई सम्पत्ति होती है, जो कि जीवन पर्यन्त रहता है। इस प्रकार की सिद्धियों का वर्णन योगसूत्र १६ से ३२ तक मुख्य रूप से किया गया है, जहाँ विभूतियाँ (कुछ को छोड़कर) मुख्यतया ज्ञानात्मक ही हैं।

On the other hand there are some Attainments (=*vibhuti),* where the Yogi has to act physically also, according to the knowledge achieved by him from the *Sanyama*. These Attainments (=*vibhutis)* are called Practical Attainment (=*Vibhuti)* (which is termed as practical physical /

mental power). The following yogic powers are the example of such Attainments (=*vibhutis)*:

दूसरी ओर कुछ विभूतियों की प्राप्ति हेतु योगी को, सयंम के विषय से प्राप्त ज्ञान के अनुसार, शरीरिक क्रियाविशेष की भी आवश्यकता होती है, वे क्रियात्मक सिद्धियाँ कहाती हैं। निम्न सिद्धियाँ क्रियात्मक सिद्धियाँ कही जाती हैं —

Knowledge of earlier birth (Sutra 18),
Power of disappearance of physical body (Sutra 21),
Power of friendliness (Sutra 23),
Achievement of Physical powers of elephant (Sutra 24),
Power to control hunger and thrust (Sutra 30),
Power to enter into the body of other living being (Sutra 38),
Power to remain untouched with water, thrones etc (Sutra 39),
Glowing of Body (Sutra 40),
Power to hear the sounds (said to be unhearable) (Sutra 41),
Power to move / walk into Space / Sky (Sutra 42),
Powers of attenuation and others siddhis (anima etc)
(Sutra 44 – 46),
Super power of mind by victory over sense-organs (Sutra 47-48),

पूर्व जन्मों का ज्ञान (योगसूत्र १८);
अन्तर्धान होन की सिद्धि (योगसूत्र २१);
मैत्री आदि सिद्धियाँ (योगसूत्र २३);
हस्तिबल आदि की सिद्धि (योगसूत्र २४);
क्षुत्-पिपासा निवृत्ति सिद्धि (योगसूत्र ३०);
पर-शरीर प्रवेश सिद्धि (योगसूत्र ३८);
जल, पंक, कण्टक आदि से असंगता की सिद्धि (योगसूत्र ३९);
शरीर की ओजस्विता की सिद्धि (योगसूत्र ४०);
दिव्य शब्दों को सुनने की सिद्धि (योगसूत्र ४१);
आकाश गमन की सिद्धि (योगसूत्र ४२);

अणिमा आदि सिद्धियाँ (योगसूत्र ४४-४६);

इन्द्रिय जय की सिद्धियाँ (योगसूत्र ४७-४८);

One who recognizes the distinction between the mind and the Soul, he achieves the supremacy over all states of being and omniscience (Sutra 49). By remaining desire-less on the above achievements also, the seeds of bondage are destroyed and Yogi is above to get state of Salvation (Sutra 50).

योगसूत्र ४६ के अनुसार जो योगी बुद्धि और पुरुष के भेदज्ञान का साक्षात्कार कर लेता है, उसे सभी पदार्थों का यथार्थ ज्ञान और सभी भावात्मक पदार्थों के स्वामित्व की सिद्धि प्राप्त हो जाती है; तथा योगसूत्र ५० में महर्षि पतञ्जलि यह प्रतिपादित करते हैं कि इन सिद्धियों से भी वैराग्य होने पर योगी को कैवल्य की प्राप्ति होती है।

In aphorism 54, Patanjali explains the properties, qualities of Discriminative Knowledge (=Vivekajgyan). He says it is the intuitional, has everything for its sphere of operation, has all-condition for its sphere of operation and has no succession.

योगसूत्र ५४ में महर्षि पतञ्जलि विवेकज ज्ञान की विशेषताओं का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार विवेकज-ज्ञान तारक (= अपनी प्रतिभा से उत्पन्न होने वाला); सभी पदार्थों को विषय बनाने वाला; क्रम की अपेक्षा के बिना, तथा सभी पदार्थों के अवस्था परिणामों के ज्ञान वाला होता है।

In the end of this *pada Maharishi Patanjali* explains that by achieving the purity of mind as comparable to purity of Soul, the Yogi is able to get the salvation (Sutra 55).

इस पाद के अन्त में महर्षि पतञ्जलि यह प्रतिपादित करते हैं कि जो योगी बुद्धि और आत्मा इन दोनों की शुद्धियों की समानता को प्राप्त कर लेता है, वह कैवल्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। योगसूत्र ५५।

Kaivalya-Pada
(ON SALVATION)
कैवल्यपाद

This *pada* contains 34 Sutra. Salvation (=*Kaivalya)*, is which the ultimate goal of the Yogi, means detachment of Soul from the Nature. It deals with the *Sanskara* – i.e. impressions available in the Mind (*Chitta*) created by the mental, oral or physical actions during the endless cycle of birth and rationale behind the necessity of erasing these impressions.

इस पाद में कुल ३४ सूत्र हैं। कैवल्य, जो कि मानव जीवन का अन्तिम और सार्थक लक्ष्य है एवं योगी का उद्देश्य है, का अभिप्राय है कि आत्मा का प्रकृति के बन्धनों से छूट जाना। इस पाद में चित्तस्थ संस्कारों = कर्म वासनाओं जो कि व्यक्ति के मानसिक, वाचिक और शरीरिक कर्मों से बनती हैं, का विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है। ये वासनायें जन्म-मरण की अनन्त श्रंखला में व्यक्ति के कर्मों से बनती हैं, तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु इन संस्कारों = वासनओं को नष्ट करना कितना आवश्यक है, इसका इस पाद में वर्णन किया गया है।

The chapter starts with the concept of attainments (= *Siddhis)*. There are five types of attainments i.e. by birth, by medication, by Mantra, by Purificatory Action (=Tapa) and by Trance (=Samadhi) (Sutra 1). In the next birth the body is created by the filling of nature's particles according the actions (=*Karmas)* of the human beings (Sutra 2). Depending on the attainments (=*siddhis),* various type of mindsets can be created by the Yogi (Sutra 4) and these mindsets are controllable by the Natural Mind (*Chitta*) available in this body since start of birth-cycle. Only the mind created by the meditation (=*Samadhi*) is free from impressions of human actions (=*Sanskaras*) (Sutra 6).

इस पाद का आरम्भ पाँच प्रकार की सिद्धियों के वर्णन से होता है, जो कि जन्म,

ओषधि, मन्त्र, तप और समाधि जन्य होती हैं (योगसूत्र १)। सूत्र २ में जात्यन्तर परिणाम किस प्रकार से होता है अर्थात् विभिन्न योनियों के शरीरों की प्राप्ति किस प्रकार से होती है, इसका वर्णन किया गया है। उपरोक्त विभिन्न प्रकार जन्मादि सिद्धियों की प्राप्ति से विभिन्न प्रकार के चित्त स्तर प्राप्त किये जाते हैं जिसे निर्माणचित्त के रूप में योगसूत्र ४ में कहा गया है। ये सभी प्रकार के चित्तस्तर एक ही चित्त (जो कि अहंकार नामक तत्त्व का परिणाम हैं, तथा सूक्ष्म शरीर का अंग है और जन्म-मरण की अनवरत यात्रा में जीव के साथ लगा हुआ है) से संचालित होते हैं। (सूत्र ५) केवल मात्र समाधि से बना चित्त ही वासना रहित होता है। (सूत्र ६)

All type of Actions (=*Karma)* of Yogi are free from the pious and sins (=*Punya and Papa)* where as *Karma* of other human beings are of three types i.e. pious (*Punya*), sins (*papa*), and mixture of the two (Sutra 7). According the nature of karma the impressions are created in the Mind (Chitta) (Sutra 8). Since the desire to live is eternal, impressions are also beginningless (Sutra 10). These endless impressions are being held together by cause, effect, basis and support. These impressions are controlled by controlling these four roots (Sutra 11).

योगसूत्र में महर्षि पतञ्जलि स्पष्ट करते हैं कि योगी के कर्म पुण्य-पाप से रहित होते हैं, जबकि अन्य व्यक्तियों के कर्म तीन प्रकार के अर्थात् पापकर्म, पुण्यकर्म और मिश्रित कर्म होते हैं। उन कर्मों के अनुसार चित्त में वासनओं की अभिव्यक्ति होती है (सूत्र ८)। जीवन की कामना नित्य होने से चित्तस्थ वासनाओं का अनादि होना भी सिद्ध होता है (सूत्र १०)। योगसूत्र ११ के अनुसार हेतु, फल, आश्रय और आलम्बन रूप चार कारणों से वासनाओं का संग्रह होता है और इन चार कारणों का अभाव होने पर वासनओं का भी अभाव हो जाता है।

The knowledge of various objects / subject is created in the mind (*Chitta)* only when the mind is attached to the particular subject / object (Sutra 17). Since the *vriti* (modification) can be created only when the mind gets attached to the particular object / subject. So the only a particular modification (=*vriti)* is available in the mind (*Chitta*) at a particular

time and this is called the knowledge of particular subject / object in the mind and all other modifications (=*vritis)* are unknown in the mind (*Chitta)* at that particular time. When the mind (*Chitta*) will get attached to the other object / subject, then at that time that modification (=*vriti)* will be known in the mind (*Chitta*). On the other hand all the modifications (=*vritis)* are always known to the Soul (*Pursha*), since he is not changeable in himself (Sutra 18).

योगसूत्र १७ में महर्षि पतञ्जलि स्पष्ट करते है कि चित्त बाह्य विषय से उपराग की अपेक्षा वाला होने से, चित्त का जब बाह्य विषय से सम्बद्ध होता है तो वह विषय चित्त में ज्ञात होता है और जिस विषय से सम्बद्ध नहीं होता वह विषय चित्त में ज्ञात नहीं होता। क्योंकि वृत्तियाँ तभी बनती हैं, जब मन = चित्त किसी वस्तु / विषय से सम्बद्ध होता है। इसलिये एक समय में केवल एक ही वृत्ति चित्त में उपलब्ध होती है, यह चित्त उस वस्तु / विषय विशेष का ज्ञान कहाता है, तथा उस काल में अन्य वृत्तियाँ चित्त में अज्ञात रहती हैं। जब चित्त दूसरे विषय / वस्तु से सम्बद्ध होता है, तब वह विषय / वस्तु चित्त में ज्ञात हो जाता है, और अन्य अज्ञात हो जाते हैं। परन्तु दूसरी ओर इस चित्त का स्वामी जो पुरुष है, उसे चित्त की वृत्तियाँ सदा ज्ञात रहती है, क्योंकि पुरुष का अपरिणामी कहा गया है। (सूत्र १८)।

Soul (*Pursha*) is the observer and receiver of the modifications (=*vritis)* available in the mind (*Chitta*) and acts according to the modifications (=*vritis)* available through the mind (Sutra 22). The mind (*Chitta*) is full of endless impressions created during infinite life-cycle of Soul. But these impressions are not for itself, since it the made of nature and nature is for the benefit of *Purusha* (Soul) (Sutra 24).

योगसूत्र २२ के अनुसार आत्मा = पुरुष चित्त की वृत्तियों का ज्ञाता तथा ये वृत्तियाँ चित्त रूप परार्थ पदार्थ के लिए न होकर पुरुष रूप सत्ता का भोग बनती हैं, तथा पुरुष उन वृत्तियों के अनुसार व्यवहार करने वाला होता है। सूत्र २४ में महर्षि पतञ्जलि कहते हैं कि चित्त, आत्मा की जन्म-मरण की अनवरत यात्रा में, असंख्य वासनाओं से चित्रित होता है। परन्तु ये वासनायें उसके अपने लिये न होकर अपने स्वामी पुरुष

के लिये होती हैं, क्योंकि चित्त प्रकृति के सत्त्व, रज और तम गुणों से मिल कर बना होने से परार्थ है अर्थात् अपने से भिन्न अन्य = आत्मा के प्रयोजन को सिद्ध करने वाला है।

Last 10 aphorisms explain the practical aspects of achieving salvation (kaivalya). For detailed please see our book.

इस पाद के अन्तिम १० सूत्र मोक्ष प्राप्ति के क्रियात्मक ज्ञान का विशेष रूप व्याख्यान करते हैं। इनकी व्याख्या हमारे योगभाष्य में देखें।

Satish Arya

सतीश आर्य